आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 2/जून 2022
Received:15/06/2022; Accepted:18/06/2022; Published:24/06/2022

अंतिम साक्ष्य उपन्यास में स्त्री विमर्श

शिल्पा एम.[1] , डॉ. डी.आर. जयप्रकाश [2]
हिंदी अध्ययन विभाग
मैसूर विश्वविद्यानिलय
मैसूर-570006
मोबाइल: 8050736568

शिल्पा एम.[1] ,डॉ. डी.आर. जयप्रकाश[2] , अंतिम साक्ष्य उपन्यास में स्त्री विमर्श , आखर हिंदी पत्रिका, खंड2/अंक 2/जून 2022, (121-127)

1. अनुरूपी लेखक
2. सह लेखक

स्त्री विमर्श समाज में स्त्री के स्थान और व्यक्तित्व को निश्चित करनेवाली भूमिका है। स्त्री विमर्श - लिंग,जाती,राजनीति इन सब से अलग विशिष्ठ और विस्तृत है। स्त्री विमर्श पुरुष विरोधी न हो कर पुरुष सत्तात्मक चिन्तनों की विरोधी है जो स्त्री को प्रतिस्पर्धी के रूप में देखतें हैं। “स्त्री विमर्श, स्त्री का पुरुष के विरुद्ध युद्ध नहीं है, बल्कि स्त्री को मानवीयता के नियमों की कसौटी पर अपने व्यक्तित्व को खोजना ही स्त्री विमर्श है, नारीवाद है।”[1]

लेखिका चन्द्रकान्ता आज की आधुनिक महिला साहित्यकारों में अपनी अलग पहचान बना चुकी हैं। चन्द्रकान्ता सामाजिक, नारीवाद, आतंकवादी से संबंधित रचनाओं से अधिक प्रसिद्ध है क्योंकि कश्मीर में जन्मी, पली-बढ़ी चन्द्रकान्ता ने अपने पृष्ठभूमि पर आधारित कुछ कहानियाँ और उपन्यास लिखी हैं। इनकी रचनाओं के आधार पर इन्हें कश्मीर के विशेषज्ञ कहना गलत नहीं होगा।

इनकी रचनाओं में अधिकतर महिलाओं को ही इन्होंने केंद्र बिंदु बनाकर उनकी सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक स्थितियों के बारे में चर्चा की है। इसका एक उदाहरण है उनका ‘अंतिम साक्ष्य’ उपन्यास। ‘अंतिम साक्ष्य’ उपन्यास चन्द्रकान्ता के अद्भुत रचनाओं में से एक है। इस उपन्यास में इन्होंने नारियों के मानसिक अंतर्द्वंद को दिखाया है। दो औरतों की जिंदगी में परिस्थितियाँ ऐसे आते हैं, जहाँ दोनों औरतों को न ही

सही ठहराया जा सकता है न ही गलत। चन्द्रकान्ता जी ने 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास को पूर्व दीप्ति शैलि में लिखकर इसे एक विशेष रूप में प्रस्तुत किया है।

अंतिम साक्ष्य उपन्यास को दस अंकों में बाँटा गया है। हर अंक का अपना अलग ही महत्व है, चन्द्रकान्ता जी ने इस उपन्यास में संभाषण रूप को भी अपनाया है।

जम्मू की ठकुरी आनबान और शान - शौकत से भरी एक सुखी परिवार था प्रताप सिंह और बीजी का| बीजी ने बड़े प्यार से इस परिवार को संजोया था। इनके दो बेटे थे एक सुरेश और दूसरा विकी। इनका एक खुशहाल जिंदगी था। बाऊ जी, बीजी का बहुत ख्याल रखते थे, बीजी जब बाहर के औरतों के साथ ड्योढ़ी में नंगी सीमेंट पर बैठकर बातें करती थीं तो बाऊ जी को यह अच्छा नहीं लगता था, वो उनके शान के खिलाफ था, तो उन्होंने ड्योढ़ी में सीमेंट की एक बेंच बनवा दी थी। जब बच्चों के हरकतों से बीजी रूठ जाती तो बाऊ जी उन्हें अपने हाथों से खाना खिलाते थे। उपवासों के दिनों में खुद फल लाकर फल खिलाकर उपवास तुडवाते थे। बीजी और बाऊ जी साथ मिलकर सुरेश और विकी के भविष्य की योजनाएँ बनाते थे, सुरेश बड़ा बनकर आर्मी ऑफिसर बनेगा विकी चीफ इंजीनियर बनेगा। रात भर इसी के चर्चा करते रहते थे।

बाऊ जी इसी सुखद भविष्य की आशा करते हुए दिनभर कड़कती धूप में सड़कों पर खड़े होकर कॉन्ट्रैक्टरों, इंजीनियरों के समस्याओं को सुनते और उनको हल सुलझाते थे। मजदूरों से भी काम करवाते थे। शाम को थका - हारा कर घर आते तो ड्योढ़ी में बीजी को इंतजार करता देखकर बाऊ जी का जी खुश हो जाते थे। वे कहते, - "जाने कैसी जादूगरनी है तू देशी, तुझे देख कर बाहर का सब कुछ भूल जाता हूँ"।[2]

चन्द्रकान्ता जी ने यहाँ पर एक आदर्श गृहिणी के रूप को दिखाया है। वह किस तरह परिवार के लिए समर्पित होती है इसे बीजी के रूप में साँझा किया है। बाऊ जी भी घर आते ही एक इमानदार पति और जिम्मेदार पिता बन जाते थे।

बड़ा बेटा सुरेश माँ-बाप का बड़ा लाडला था और इसी लाडलापन् ने उसे बहुत बदमाश और आवारा बना दिया था। बुरे दोस्तों की संगत हो गई थी। बीजी बहुत डांटती है और प्यार से बेटे को समझाती थी। मगर उम्र ही ऐसा था कि वह किसी की भी नहीं सुन पा रहा था। छोटा बेटा विवेक (विकी) माँ का लाडला बेटा, माँ की हर बात मानता था। पढ़ाई में भी अच्छा था। बीजी सुरेश से गुस्सा करती तो अपना सारा प्यार विकी पर लुटा देती थी। इस खुशहाल परिवार में मीना मौसी कैलाश के दोस्त के रूप में परिचित होती है। मीना मौसी सुरेश के मंगनी में गाना गाती है, जिसे सुनकर प्रताप सिन्हा मीना के दर्द भरे सुरीली आवाज में डूब जाता है। जब बीजी और बाऊ जी को मीना मौसी के पिछली जिंदगी के बारे में पता चलता है तो वह बहुत सहानुभूति दिखाते हैं। बीजी-बाऊ जी को मीना के दर्द पूर्ण कहानी सुनाती है। कैसे अनाथ मीना अपने ही चाचा चाची के अत्याचारों की बलि चढ़ा दी गई।

बिना माँ- बाप के बारह वर्षीय बच्ची मीना को उसके चाचा-चाची पचास वर्षीय विदुर लाला के साथ शादी करवा देते हैं। लाला, मीना को पाने के बहुत लालच था, - "वक्त कोहरे की परतों पर परतें जमा देता है और अंधी दौड़ में हाँफते-भागते लोग खूंखार पशु बनकर हर संज्ञा खो जाते हैं। शेष रह जाती है एक लपलपाती भूख, जिसमें स्त्री महज एक औरत रहती है, माँ, बहन, बेटी सभी संबंधों से परे, एक भोग्य शरीर मात्र।"[3]

लालच भरी नजरों से जब,- "बुड्ढा मीनू का घूँघट उठाता है। मायूस चेहरे पर दो निष्पंक तरल दीप लिए नन्हीं मीनू के चेहरे में अचानक उसकी नन्हीं पोती का मुखड़ा झांक आता है। तब बुड्ढे लाला के रेशम के महीन इत्र से महकते कुर्ते से, खिजाब रंगे केशों से और बेला-मोगरा के गजरों से सजे पलंग से ज्वालामुखी की लपटें उठने लगती है। लाला इन लपटों के हाहाकार में झुलसने लगता है। उत्साह से उठे उसके हाथ निर्जीव माँस के लोथ-से गोद में गिर जाते हैं।"[4]

लाला के बच्चे भी मीना को माँ के रूप में स्वीकार नहीं कर पाते। लाला को,- "अपने जवान बेटों की लोलुप नजरों से भय खा गया।"[5] तो लाला की,- "रातों की नींद और दिन का करार हराम हो गया।"[6] लाला घर में कुछ गलत ना हो जाए यह सोचकर और मीना पर तरस खाकर उसे वापस चाचा-चाची के घर भेज देता है।

पैसों के लालच में पड़ी चाची मीना को जली कटी सुनाती है, फिर कुछ महीने बाद चाची मीना को जगन नामक गुंडे के साथ ब्याह कराने की सोचती है। तब मीना मना करती है और चाची से शादी न करवाने की विनती करती है तो चाची कहती,- "हट पगली! अब अपने घर खाना बनाना। कोई लड़की कभी हमेशा अपने माँ - बाप के घर रही है? तेरी किस्मत अच्छी थी कि जगन ब्याह के लिए राजी हो गया। नहीं तो एक बार जो मंडप चढ़ी, उसका हाथ कौन थामता है?"[7] कहकर मीना को समझाकर शादी करवाकर भेज देती है। जगन भी कुछ दिन पत्नी के नाम पर मीना पर अत्याचार करता है और मदन सिंह नामक दलाल से मिलकर मीना को कोठे पर बेच देता है। मीना जब दुखी होकर घर जाने की जिद करती है तो कोठेवाली एक औरत उसे निर्ममता से देखती है और कहती है,- "बिट्टो! यहाँ जो एक बार आता है? वापस नहीं जाता। इस घर के दरवाजों के सिवा अब सभी दरवाजे तुम्हारे लिए बंद हो गए। तुम्हें मदन दलाल ने नहीं बताया?"[8] तो मीना घबरा जाती है और वह अब एक पिंजरे में कैद हो गई थी। वहाँ के एक भले संगीत मास्टर ने मीना को उस नर्क से निकालकर रेडियो आर्टिस्ट बना दिया। यह सब बात बीजी प्रताप सिंह को बताते बताते कहती है कि,- "भला इस भाग्य की सताई औरत के साथ किसे हमदर्दी ना होगी?"[9] यह सब सुनकर बाऊ जी मीना को सहानुभूति के साथ- साथ अपना दिल दे बैठते हैं।

चन्द्रकान्ता जी ने एक लाचार और बेबस बच्ची का किस तरह से दुरुपयोग किया गया उसकी लाचारी का किस तरह फायदा उठाया गया। इसका चित्र को भी दिखाया है एक असहाय बच्ची का दर्द ना किसी ने जाना ना समझा।

इधर सुरेश की आवारागर्दी दिन-ब-दिन बढ़ती जाती है। कॉलेज से कंप्लेंट आतें हैं, कभी पुलिस आती है। जब बाऊ जी और सुरेश में इसके बारे में बहस होती है तब सुरेश गुस्सा हो जाता है और बाऊ जी पर गन तान देता है। उस वक्त बाऊ जी का दिल बैठ जाता है। और यहाँ से उनका रवैया परिवार की तरफ बदलने लगाता है।

पहले पहले जब बाऊ जी मीना मौसी से मिलने जाते थे तो मीना मौसी ने बाबूजी का बहुत विरोध किया था, कहती थी,- “नहीं, मैं दीदी से किसी प्रकार का विश्वासघात नहीं करुँगी।”[10] मीना मौसी जो किस्मत से हारी, हमेशा अकेलेपन के शिकार, प्यार की प्यासी थी वह बहुत समय तक न बाऊ जी को रोक पाई ना ही अपने आप को।

मीना बाऊ जी की संपूर्ण प्रेमिका थी, जिसके पास आकर बाऊ जी घर के हर कलह को भूल जाते थे। मीना मौसी के घर में रहते-रहते बाऊ जी रात में देरी से अपने घर जाने लगे। मगर बीजी हमेशा की तरह खाने के लिए उसी सीमेंट के बेंच पर बैठकर बाऊ जी का इंतजार करती रहती थी इन सब बातों से अंजान।

पर जब बीजी को मीना और बाऊ जी की बात पता चलती है तो वह विद्रोह और विश्वासघात को सहन नहीं कर पातीं है, और अंदर से टूट जाती है। बिजी मीना मौसी से कहती है कि,- “उम्र भर का ज़हर तूने मेरे लिए ही संजो रखा था सर्पिणी!”[11] कह कर अपना दुख दिखाती है।

मीना प्रताप को उसके घर आने से रोकना तो चाहती थी पर प्रताप न माना, मीना प्रताप से कहती है,- “तुम दीदी के पास लौट जाओ, मुझे जहन्नुम में जाने दो मुझसे उनका घुलना सहा नहीं जाता।”[12] बाऊ जी, बीजी और मीना दोनों के बीच बट गए थे। मीना ना चाहते हुए भी बीजी को जीवन भर का दुख दे चुकी थी। “बीजी का प्राण स्त्रोत अचानक सूख गया। अपने को महत्वपूर्ण समझते, एक दुर्भाग्य-भरे दिन उन्हें महसूस हुआ कि उनका अपना आदमी उनके अस्तित्व की संज्ञा को नकार गया है।”[13] इसी घुटन में बीजी ने बिस्तर पकड़ लिया और धीरे-धीरे उनका बुखार तपेदिक में बदल गया बाऊ जी ने भी बीजी की खूब सेवा की मगर बिजी को ठीक होने की इच्छा ही नहीं थी वह स्वर्ग सिधार गईं।

बाऊ जी ने पूरे मन से बिजी के सभी कार्यों को पंडितों से करवाया। अब पूरा घर में श्मशान मौन छा गया है, घर की देखभाल करनेवाली औरत आज नहीं है, पूरा घर बिखरा पड़ा है। खाने पीने के ख्याल रखने वाला कोई नहीं था। सभी रिश्तेदार अपने अपने घर चले गए।

चन्द्रकान्ता जी ने यहाँ पर दिखाया है कि किस तरह एक औरत खुशहाल परिवार की सारथी होती है, अगर वह सारथी भटक जाता है तो पूरा संसार ही बिखर जाता है।

बाऊ जी मीना को अपना घर संभालने के लिए ले आते हैं मगर उससे कहते कि "तुम्हें आज भी किसी सुख का लालच देकर साथ चलने के लिए नहीं कह रहा। बस, थोड़ा सा सहारा चाहिए। मुझसे ज्यादा, खिसकती ईटोंवाले मेरे घर को।"[14] बाऊ जी का हालत देखकर और उनका निवेदन सुनकर,- "मीना मौसी उदासी, सहानुभूति और करुणा की त्रिवेणी में नहा उठी।"[15] मीना मौसी कहती है,- "एक उदास घर में परिचित अजनबीयों के बीच वह अपनत्व और प्यार बाँटने आई थी। प्यार, संवेदना, सेवा कुछ भी नाम दो, मीना मौसी तो देने आई थीं, जो कुछ भी उसके पास था।"[16] जो स्वयं को खोकर भी दूसरों को जोड़ने की कोशिश कर रही थी।

अब सुरेश बाऊ जी के हाथ से निकल चुका था। घर को अच्छा खासा बाजार बना लिया था। बाऊ जी, मीना मौसी, विकी सब मूकदर्शक बनकर सब कुछ देख रहे थे। बाऊ जी को विकी कि ज्यादा फिक्र थी क्योंकि माँ से ज्यादा जुड़ाव विकी को ही था। विकी घर की माहौल में पढ़ नहीं पा रहा था तो घर छोड़ने की बात करता है तो बाऊ जी को धक्का लगता है, बाऊ जी की जीने का उम्मीद विकी ही था। पर बाऊ जी विकी रोक नहीं पाते हैं, उसके आंखों में उन्होंने झलकता विरक्ति को देख ली थी।

सुरेश की आवारगी को देखकर उसकी मंगनी टूट जाती है तो गुस्से में घर से भाग जाता है। बाऊ जी परिवार की इस बिखराव को देखकर सोच में पड़ गए। उन्हें भी अनिद्रा रोग लग गया था। रात भर जागते रहते थे, मीना बाऊ जी का जितना भी दिल बहलाने की कोशिश करती, मगर बाऊ जी सो नहीं पाते थे। कभी छत पर, कभी इधर-उधर टहलते रहते थे। बाऊ जी मीना से बीजी के साथ मिलकर उन्होंने बच्चे के लिए जो योजनाएँ बनाए थे उसके बारे में बताते थे और कैसे सब कुछ खत्म हो गया इसके बारे में सोच कर उदास हो जाते थे। रात भर मीना को गाना सुनाने को कहते थे बाऊ जी की इस हालत को देखकर मीना का दिल भी भर आता था।

घर छोड़कर जाने के बाद अब विकी दिल्ली में लेक्चरर का काम कर रहा था, तो घर से भाग कर सुरेश फौज में भर्ती हो गया था। विकी को माँ की बहुत याद आती रहती थी। सब कुछ धीरे - धीरे संभल ने लगा था, कि विकी को बाऊ जी कि सड़क दुर्घटना कि बात पता चलती है। बाऊ जी कि हालत देखकर विकी आँखें भर आती हैं, तभी मीना मौसी सुरेश की पत्र विकी को देती है। जिसमें सुरेश ने विकी को संबोधित करते हुए लिखा था- "सब कुछ खत्म होने के बाद गड़े मुर्दे उखाड़ने के लिए मत बुलाओ विकी। संस्कारों में कभी मेरा विश्वास नहीं रहा। तुम अच्छे बेटे की तरह जिए, अच्छे बेटे की तरह बाऊ जी की अंतिम इच्छाएँ भी पूरी करोगे, मुझे पूरा भरोसा है। अब मेरे वहाँ पहुंचने में देर हो गई है। वहाँ आने का अब कोई अर्थ भी नहीं। नहीं, अब मैं कभी

नहीं आऊँगा"[17] बाऊ जी के गुजर जाने के बाद विकी रोने लगता है तो मीना मौसी विकी को संभालने लगती है और कहती है - "सब कुछ तो पहले ही खत्म हो गया था बेटा! अब इस मिट्टी के लिए क्या रोना।"[18] विकी और मीना मौसी सभी अंतिम कार्य पूर्ण करते हैं। विकी बीजी के स्मृतियों से कभी भी स्वयं को मुक्त ही नहीं कर पा रहा था। ड्योढ़ी में बैठ कर बीजी किस तरह सबको गरम - गरम खाना परोसती थी, सब के बिना पूछे ही उनकी हर इच्छाओं को पूरी करती थी, छत पर बैठकर यहाँ - वहाँ की नजारा देख कर खुश हो जाना पूरे घर में उनकी आहट उनकी खुशबू यह सब याद करके विकी पुरानी यादें ताजा हो जाती हैं। रात भर सो नहीं पाता है और करवटें बदलते रहता है और एक निर्णय लेता है।

विकी मकान बेच देता है और मीना मौसी को अपने साथ महानगर ले जाता है। मीना मौसी जो सब कुछ खोकर बाऊ जी और उनके परिवार से जुड़ी थी वहाँ से भी निकल कर फिर से नए अस्तित्व की तलाश पर निकल पड़ी थीं। विकी पर ममता का छाँव बनकर। गाँव के लोग कह रहे थे कि बाऊ जी के घर को एक धर्मशाला बना दिया जाएगा जो एक खुशहाल परिवार का अंतिम साक्ष्य था।

निष्कर्ष:

इस उपन्यास में चन्द्रकान्ताजी ने नारी का परिवार के प्रति समर्पण और त्याग की भावना को दिखाया है। एक परिवार नारी से ही बनता है इस बात को बीजी के रूप में दिखाया है तो किस तरह परिवार टूटने की वजह भी एक नारी ही बनती है, इसका उदाहरण मीना मौसी के रूप में दिखाया है। मुख्यतः चन्द्रकान्ता जी ने इस नारी अस्तित्व व संघर्ष को ही इस उपन्यास का आधार बनाकर स्त्री जीवन को प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास एक परिवार जुड़ने - टूटने और फिर से खड़े होने का एक मार्मिक चित्रण है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि :-

1. नागफनी पत्रिका, प्रो. प्रतिभा मुदलियार (वर्ष 11, अंक 37, अप्रैल -जून 2021) पृष्ठ सं. 02
2. अंतिम साक्ष्य(उपन्यास), चन्द्रकान्ता, अमन प्रकाशन कानपुर, द्वितीय संस्करण 2015 पृष्ठ सं. 42
3. वही, पृष्ठ सं. 14
4. वही, पृष्ठ सं. 14
5. वही, पृष्ठ सं. 15
6. वही, पृष्ठ सं.15
7. वही, पृष्ठ सं. 16
8. वही, पृष्ठ सं. 19
9. वही, पृष्ठ सं. 14

10. वही, पृष्ठ सं. 43
11. वही, पृष्ठ सं. 37
12. वही, पृष्ठ सं. 44
13. वही, पृष्ठ सं. 39
14. वही, पृष्ठ सं. 45
15. वही, पृष्ठ सं. 45
16. वही, पृष्ठ सं. 55
17. वही, पृष्ठ सं. 63
18. वही, पृष्ठ सं. 12

****